उत्तराखण्ड विद्यालयी शिक्षा परिषद्, रामनगर (नैनीताल)	हाईस्कूल परीक्षा (उत्तराखण्ड) "अ" 10 पन्ने

केन्द्र संख्या की मुहर | केन्द्र व्यवस्थापक के हस्ताक्षर

नोट–केन्द्र के नाम की मुहर उत्तरपुस्तिका के किसी भी भाग पर न लगाएं।

नोट–परीक्षार्थी उत्तरपुस्तिका के किसी भी भाग में अपना नाम व केन्द्र का नाम न लिखें।

'ब' उत्तर पुस्तिका की संख्या–	$ब_1$	$ब_2$	$ब_3$	$ब_4$
हस्ताक्षर कक्ष निरीक्षक–				

परीक्षार्थी द्वारा भरा जायेगा–

अनुक्रमांक (अंकों में)–

अनुक्रमांक (शब्दों में)–

विषय–

प्रश्नपत्र संकेतांक–

परीक्षा का दिन–

परीक्षा तिथि–

कक्ष निरीक्षक द्वारा भरा जाय–

केन्द्र संख्या–

परीक्षा कक्ष संख्या–

उपरोक्त सभी प्रविष्टियों की जाँच मेरे द्वारा सावधानीपूर्वक कर ली गयी है।

कक्ष निरीक्षक का नाम–

दिनांक–

हस्ताक्षर कक्ष निरीक्षक

प्रमाणित किया जाता है कि मैंने इस उत्तर पुस्तिका का मूल्यांकन समुचित प्रश्न–पत्र संकेतांक तथा मूल्यांकन निर्देशों के अनुसार किया है। प्राप्तांकों का मुखपृष्ठ पर अग्रसारण कर प्राप्तांकों एवं प्राप्तांकों के योग का मिलान कर लिया गया है। एवार्ड ब्लैक में प्राप्तांकों की अंकना कर उनका पुनः मिलान भी कर लिया है। किसी भी प्रकार की त्रुटि के लिए मैं उत्तर ... गी।

परीक्षक के हस्ताक्षर एवं संख्या...

1. ... संख्या...

2. ... व संख्या...

सन्निरीक्षा प्रयोगार्थ

सन्निरीक्षा पूर्व अंक–

सन्निरीक्षा पश्चात अंक–

त्रुटि का प्रकार–

दिनांक–

हस्ताक्षर निरीक्षक–

परीक्षक, निम्न तालिका में प्रत्येक प्रश्न तथा उसके खण्डों के प्राप्तांकों का विवरण यथास्थान भरें।

प्रश्न संख्या	क	ख	ग	घ	ङ	च	छ	ज	झ	ञ	योग
01											
02											
03											
04											
05											
06											
07											
08											
09											
10											
11											
12											
13											
14											
15											
16											
17											
18											
19											
20											
21											
22											
23											
24											
25											
26											
27											
28											
29											
30											

योग (शब्दों में)   योग (अंकों में)

प्रश्न संख्या '1' का उत्तर :-

उ०:- उत्तराखण्ड।

प्रश्न संख्या '2' का उत्तर :-

उ०:- सीमेंट।

प्रश्न संख्या '3' का उत्तर :-

उ०:- कपास।

प्रश्न संख्या '4' का उत्तर :-

उ०:- गुजरात।

प्रश्न संख्या '5' का उत्तर :-

उ०:- जापान की प्राचीनतम मुद्रित पुस्तक 'डायमण्ड सूत्र' है जिसकी रचना सन् 868 ई० में की गयी।

प्रश्न संख्या '6' का उत्तर :-

उ०:- **शहरीकरण :-** शहरीकरण से तात्पर्य यह है कि, लोगों का रोजगार व आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए नगर, कस्बों व गाँवों को छोड़कर शहरों की ओर पलायन करना शहरीकरण कहलाता है।

प्रश्न संख्या '7' का उत्तर :-

उ०:- **सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार :-**

सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार का आशय है कि 18 वर्ष की निश्चित आयु के पश्चात सभी वर्ग के स्त्री पुरुषों व वयस्कों को मत देने का अधिकार प्राप्त होता है, सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार कहलाता है।

प्रश्न संख्या '8' का उत्तर :-

उ० :- H·D·I → ह्यूमन डेवलपमेण्ट रिपोर्ट
(मानव विकास सूचिकांक)

प्रश्न संख्या '9' का उत्तर :-

उ० :- राष्ट्रीय स्तर पर नाभिकीय आपदा प्रबन्धन के लिए नोडल मंत्रालय एंव गृह-मंत्रालय उत्तरदायी होता है।

प्रश्न संख्या '10' का उत्तर :-

उ० :- N·C·C :- नेशनल कैडिट कोड,

प्रश्न संख्या '11' का उत्तर :-

उ० :- वर्ष 1929 की आर्थिक मन्दी का भारतीय अर्थव्यवस्था पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा, वे प्रभाव निम्नलिखित है :—

1) वर्ष 1929 की आर्थिक महामन्दी के कारण भारत का आयात निर्यात घट कर आधे हो गये।

2) आर्थिक मन्दी का सबसे अधिक प्रतिकूल प्रभाव किसानों व काश्तकारों पर पड़ा क्योंकि ये विदेशी व्यापार के उपज पैदा करते थे।

3) पूँजीपतियों व उद्योगपतियों की बड़ी बड़ी कम्पनियाँ घराशायी हो गयी और उनके शेयर बाजारों में मूल्य घट गये।

" उपर्युक्त तथ्यों को देखकर विवेचना की जा सकती है वर्ष 1929 की आर्थिक मन्दी भारत के लिए 'काली रात' के समान आयी।

प्रश्न संख्या '12' का उत्तर :-

उ0:- उन्नीसवीं सदी के यूरोप में कुछ उद्योगपतियों ने मशीनों के बजाय हाथ से काम करने वाले

श्रमिकों को प्राथमिकता देते थे क्योंकि :-

1) मशीनें उन उद्योगपतियों की स्थिति की तुलना कई अधिक मूल्यवान थी।

2) श्रमिकों को रोजगार प्राप्त हो जाता था और मशीन से उतने उत्तम डिजाइन नहीं बन सकते थे जितने की हाथ के द्वारा बनाए जा सकते थे।

3) उद्योगपति व पूंजीपति हाथ से बुने हुए वस्त्रों को पारम्परिक विवाज मानते थे।

4) मशीनों के द्वारा उचित तंतुओं का निर्माण नहीं किया जा सकता था।

इसीलिए उन्नीसवीं सदी के यूरोप में कुछ उद्योगपतियों ने मशीनों की बजाय हाथ से काम करने वाले श्रमिकों को प्राथमिकता दी।

प्रश्न संख्या '13' का उत्तर :-

उ० :- मुद्रण संस्कृति ने भारत में राष्ट्रवाद के विकास में निम्नलिखित योगदान दिए।

(i) समाचार पत्रों का योगदान :-

मुद्रण संस्कृति ने समाचार पत्रों के द्वारा भारत के विभिन्न-भिन्न क्षेत्रों में राष्ट्रवाद की लहर जगाई, नवयुवकों में राष्ट्र के प्रति नव जागृति आई।

(ii) पुस्तकों का योगदान :- मुद्रण संस्कृति ने पुस्तकों के द्वारा विभिन्न महापुरुषों व क्रांतिकारियों के जीवन चरित्र को पुस्तकों में छापकर जन प्रसारित किया जिससे राष्ट्रवाद की भावना जागृत हुई।

(iii) मुद्रण संस्कृति द्वारा धार्मिक आडम्बरों का विरोध :- मुद्रण संस्कृति के द्वारा देश में उत्पन्न धर्म के प्रति धार्मिक आडम्बरों का विरोध किया गया, विभिन्न समाज सुधारकों (राजा राम मोहन राय तथा डॉ० बी० आर अम्बेडकर) द्वारा विरोध किया गया।

-0-

प्रश्न संख्या '14' का उत्तर :-

उ०:- परिवहन व संचार के साधन किसी देश की जीवन रेखा निम्न तथ्यों के आधार पर कहें जाते है।

(1) उत्पादक को उपभोक्ता से मिलाने में सहायक

परिवहन के माध्यम से उत्पादक उपभोक्ता को आवश्यक वस्तु को प्रदान कर सकता है। और वस्तुओं को उन लोगों तक पहुँचा सकता है।

(2) राष्ट्रीय एकता में सहायक :- परिवहन के द्वारा राष्ट्रीय एकीकरण में सहायता प्रदान होती है। एक राज्य दूसरे राज्य से जुड़कर संस्कृति का आदान - प्रदान होता है।

(3) मनोरंजन में सहायक :- परिवहन के द्वारा लोग अपने मनोरंजन के लिए पर्यटन स्थलों में जाते है, तथा विभिन्न पर्यटक परिवहन के माध्यम से अपने गन्तव्य तक पहुँचते है,

प्रश्न संख्या '15' का उत्तर :-

उ० :- चावल की खेती के लिए उपयुक्त भौगोलिक दशाएँ निम्नलिखित है।

(1) तापमान :- चावल की खेती कृष्ण कटिबन्धीय क्षेत्रों में की जाती है तथा चावल की खेती के लिए उपर्युक्त तापमान 25° से 35°c तक होना आवश्यक है।

(2) वर्षा :- चावल की खेती के लिए 70 से 75 मि०मी० वर्षा होनी आवश्यक है।

(3) मृदा :- चावल की खेती के लिए उपर्युक्त मृदा दोमट मृदा होनी चाहिए इस मृदा के द्वारा उचित गुणवत्ता वाली फसल प्राप्त हो सकती है।

प्रश्न संख्या '16' का उत्तर :-

उ० :- उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम 1986 :-

भारत संरकार द्वारा उपभोक्ता

अधिनियम सन् 1986 ई० को पारित किया गया, जिसे 'कोपरा' के नाम से भी जाना जाता है। भारत सरकार द्वारा उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम पारित करने के निम्न लिखित कारण हैं-

(1) उचित गुणवत्ता वाली वस्तुओं को प्रदान न करना:- बाजार में उपभोक्ताओं को उत्पादकों द्वारा उचित गुणवत्ता वाली वस्तु प्रदान नहीं की जाती है जिससे उनके स्वास्थय पर प्रतिकूल प्रभाव पडता है।

(2) मूल्य-मापन में कमी:- उत्पादक उपभोक्ताओं के कम तौल कर के वस्तुओं को प्रदान कर देते हैं जिससे उपभोक्ताओं का विश्वास हट जाता है।

(3) भ्रामक विज्ञापन:- कुछ उत्पादक अपनी बिक्री को बढाने के लिए उपभोक्ताओं को विज्ञापनों के द्वारा भ्रमित कर देते हैं। जिससे उनके स्वास्थय पर प्रतिकूल प्रभाव पडता है।

प्रश्न संख्या '17' का उत्तर :-

उ०:- **सुनामी का अर्थ :-** सुनामी शब्द जापानी भाषा के लैटिन शब्द का है। जिसका 'सु' का अर्थ 'बन्दरगाह' और नामी का अर्थ 'लहरें'।

परिभाषा :- अर्थात बन्दरगाह पर उत्पन्न होने वाली वह विनाशकारी लहरें जिनके द्वारा जनधन की अत्याधिक हानि होती है। सुनामी कहलाती है।

विशेषताएं :- (1) सुनामी की लहरें लगभग 15 मी० ऊँची उठती है।

(2) सुनामी की लहरें दिन व रात कभी भी उत्पन्न हो सकती है।

प्रश्न संख्या - '18' का उत्तर :-

(क) राष्ट्रीय सूचना केन्द्र :-

राष्ट्रीय सूचना केन्द्र भारत सरकार आंतरिक केन्द्र है तथा यह सभी केन्द्रों में सबसे मुख्य केन्द्र है, और इस केन्द्र का कार्य सूचनाओं का आदान प्रदान करना है तथा शासन सम्बन्धी सूचनाएँ एक राज्य से दूसरे राज्य तक पहुचाने का कार्य करता है।

(ख) एमेच्योर (हैम) रेडियों :-

हैम रेडियों एक विशेष प्रकार का रेडियों है तथा इसका प्रयोग साधारण रेडियो की भाँति नही किया जाता अपितु इसका उपयोग गैर व्यवसायिक कार्यो के सम्बंध में सूचना प्रदान करना है, इस रेडियों के प्रयोग में अधिक विद्युत की आवश्यकता नही होती है, अपितु इसका उपयोग सेल तथा विद्युत जनित्रों के द्वारा किया जा सकता है।

प्रश्न संख्या '19' का उत्तर :-

उ०:- 1789 की फ्रांसिसी क्रांति:-

सन् 1789 की फ्रांसिसी क्रांति ने यूरोप के विभिन्न देशों की कायाकल्प कर दी तथा फ्रांसिसी क्रांति के निम्नलिखित परिणाम हैं,

1) फ्रांस की क्रांति के कारण 'पुरातन व्यवस्था' का अन्त हो गया,

2) फ्रांस की क्रांति के उपरांत समाज में चली आ रही 'सामन्ती व्यवस्था' का अंत कर दिया गया,

3) फ्रांस में राजतंत्र का अंत करके गणतंत्र की स्थापना की गयी,

4) फ्रांस के चिन्तकों ने मानव अधिकारों की घोषणा (27 अगस्त 1789) को कर दी गयी

5) फ्रांस की क्रांति के उपरांत अन्य देशों को स्वतंत्रता समानता बन्धुत्व का विचार प्राप्त हो गया,

6) फ्रांस में नागरिकों के जन्म से संबंधित अधिकार समाप्त कर दिए गए,

7) फ्रांस में राष्ट्रीय एकता की भावना को प्रेरित करने के लिए एक समान भाषा, झण्डा, प्रतीकों का निर्माण किया गया

8) फ्रांस की क्रांति के उपरांत फ्रांस में कृषि सम्बंधी सुधार एंव अन्य सुधार किए गए

"इस प्रकार फ्रांसिसी क्रांति के फलस्वरूप फ्रांस के नागरिकों में नया उत्साह → परिवर्तन आया।

प्रश्न सं० '२०' का उत्तर :-

(क) सविनय अवज्ञा आंदोलन :-

सविनय अवज्ञा आंदोलन की शुरुआत गाँधी जी के 12 मार्च 1930 को की गयी थी, जिसे 'डांडी यात्रा' के नाम से भी जाना जाता है गाँधी जी ने गुजरात के साबरमती आश्रम से अपने 78 कार्यकर्ताओं के साथ इस आंदोलन की शुरुआत की।

गाँधी जी का इस आंदोलन का मुख्य उद्देश्य यह था कि ब्रिटिश

सरकार द्वारा पारित 'नमक कानून' को तोड़ना गाँधी जी का मानना था कि " नमक एक ऐसी वस्तु है जो अमीर तथा गरीब दोनों को प्राप्त होनी चाहिए ",

इसलिए गाँधी जी ने 240 मील की दूरी तय कर के 6 अप्रैल 1930 को डांडी नामक स्थान में नमक के पानी को उबालकर नमक बनाया जो कि नमक कानून के नियमों के विपरित था।

(ख) जलिया वाला बाग हत्याकाण्ड :-

भारतीय लोगों में ब्रिटिश शासन के रॉलट एक्ट के खिलाफ आक्रोश उत्पन्न हुआ था जिसके विद्रोह में कुछ कार्यकर्ताओं ने जलियावालां बाग में सार्वजनिक सभा आयोजित की थी परन्तु ब्रिटिश सरकार द्वारा 12 अप्रैल 1919 मॉर्शल लॉ लागू कर दिया गया था जिसके तहत सार्वजनिक सभाओं में प्रतिबंध लगा दिया गया जिसकी सूचना जनता को नही दी गयी

13 अप्रैल 1919 को बैशाखी के दिन

अनेक लोग बाग में एकत्रित हुए, मार्शल लॉ की कमान सौंपी गयी, जिन्हें 'मर जॉन' ने अपने 200 देशी तथा 50 गोरे सिपाहियों को आदेश दिया कि गोलियां चलाए, उन सैनिकों के द्वारा 10 मिनट तक निहत्थी जनता पर गोलियाँ बरसती रही जिससे कई लोग मरे तथा घायल हुए जिससे सम्पूर्ण भारत में विद्रोह की लहर दौड़ी,

---

प्रश्न संख्या - '21' का उत्तर :-

उ० :- शासन के संघीय एंव एकात्मक स्वरूपों में निम्नलिखित अंतर है,

1) शासन के संघीय व्यवस्था में तीन स्तरों की सरकार होती है, (केन्द्र सरकार) राज्य सरकार, समवर्ती होती है। जबकि एकात्मक व्यवस्था में एक ही स्तर की सरकार होती है,

2) शासन के संघीय व्यवस्था में तीनों सरकारों में शक्तियों का विभाजन किया जाता है,

जबकि एकात्मक व्यवस्था संपूर्ण शक्ति का प्रीत केन्द्र सरकार ही होती है।

3) शासन के संघात्मक व्यवस्था में केन्द्र सरकार को राज्य सरकार को आदेश देने का अधिकार प्राप्त नही है।
जबकि एकात्मक सरकार को अन्य सरकारों को आदेश देने का अधिकार है।

4) संघात्मक व्यवस्था का कानून लिखित व कठोर होता है जैसे भारत का कानून लिखित एंव कठोर है,

जबकि एकात्मक व्यवस्था में कानून लचीला व अलिखित होता है।
जैसे - अमेरिका ।

5) संघात्मक व्यवस्था में राज्यों को केन्द्र से पृथक होने का अधिकार नहीं है जिससे राष्ट्रीय एकता को खतरा हो सकता है।
जबकि एकात्मक व्यवस्था में राज्यों केन्द्र से पृथक होने का अधिकार है।

2020

रोल नं.
Roll No.

प्रश्न संख्या 29 के लिए
(For Q. No. 29)

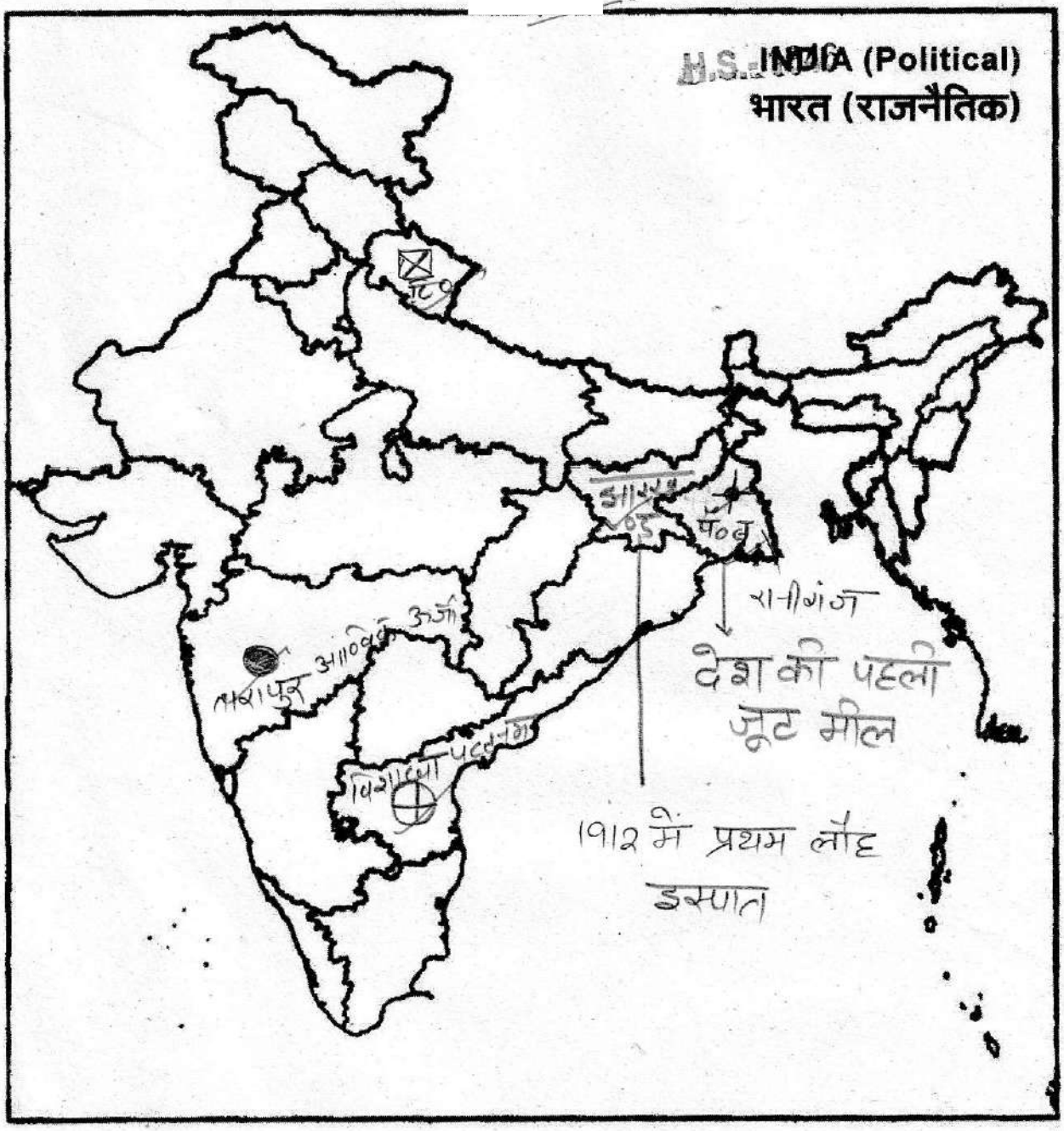

केवल परीक्षकों के लिए (For Examiners Only)	प्रश्न संख्या 29 (Q. No. 29)	अ (A)		ब (B)			
		क (a)	ख (b)	ग (c)	घ (d)	ङ (e)	च (f)
	प्रदत्त अंक (Marks Provided)						

प्रश्न संख्या '३२' का उत्तर :-

३०:- नदियों का जल प्रदूषित होने के कारण :- नदियाँ हमारी जीवन दायिनी होते हैं। तथा नदियों से हमें पीने योग्य जल प्राप्त होता है। भारत की राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था नदियों पर ही आश्रित है परन्तु हम फिर भी अपनी दैनिक व मानवीय गतिविधियों के कारण हम नदियों को प्रदूषित करते हैं।

1) नदियों में अपशिष्ट पदार्थ व विभिन्न प्रकार रसायनों का निर्वाह करके नदियाँ प्रदूषित होती हैं।

2) नदियों में फैक्ट्रियों के प्रयोगशालाओं में बनने वाले रसायनों को डालने से नदियाँ प्रदूषित हो रही हैं।

3) मानवों के मृत शरीर को नदियों में डालने में मनुष्य की आँतों में पाए जाने वाला कोलिफार्म जीवाणु नदियों को दूषित कर देता है। जिसके कारण जलीय जीवों का जीवन यापन करना कठिन हो जाता है,

4) नदियों में पॉलिथीन, थरमाकॉल आदि अपघटित न होने वाले पदार्थों को डालने के कारण।

प्रदूषण को कम करने के उपाय :-

1) नदियों में बढते प्रदूषण को कम करने के लिए भारत सरकार ने अनेक परियोजना लागू की है।

2) वर्तमान प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी ने गंगा के प्रदूषण को रोकने के लिए 14 जुलाई 2014 में नमामि गंगे परियोजना की शुरुआत की

3) इसी प्रकार हम भी नदियों का प्रदूषण कम कर सकते है जैसे नदियों में अपशिष्ट पदार्थो का निर्वाह न करके।

4) और फैक्ट्रियों के रसायनों का नदियों में विसर्ज न करके।

5) मृतक शरीरों को जल में न डालकर नादियों के प्रदूषण को रोक सकते है,

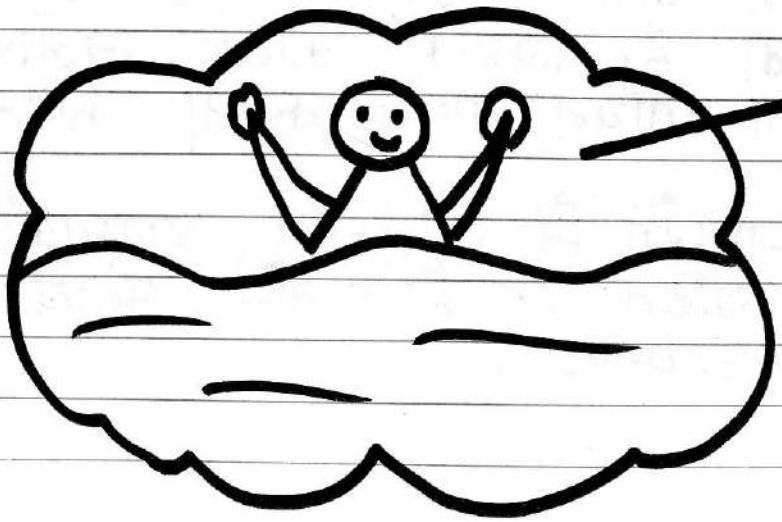

प्रश्न संख्या '23' का उत्तर :-

उ० :- लोकतंत्र निम्नलिखित परिस्थितियों में सामाजिक विविधता को संभालता है। और उनके बीच सामंजस्य बैठाता है।

लोकतांत्रिक राष्ट्र में सामाजिक विविधता तो पायी जाती है और वे सामाजिक विविधता धीरे - धीरे सामाजिक विभाजन का रूप ग्रहण कर लेती है इसके लिए लोकतंत्र अपनी गतिविधियों के द्वारा सामाजिक विविधता को सामाजिक विभाजन में बदलने से रोकता है।

लोकतांत्रिक राष्ट्र में राज्य सांस्कृतिक समानता के आधार पर पृथक - पृथक रहते है इसीलिए वे कभी भी लोकतंत्र के प्रति द्वेष भावना को जागृत करने के लिए प्रेरित हो जाते है इसीलिए लोकतंत्र में केन्द्र सरकार को राज्यों से पृथक होने का अधिकार नही है,

इसके द्वारा लोकतंत्र राज्य की विविधता के आधार पर सामाजिक विभाजन को संभालता है।

इस प्रकार लोकतंत्र अपनी लोकतांत्रिक शासन प्रणाली के द्वारा सामाजिक विविधता व विभाजन में समांनजस्य बैठता है।

प्रश्न संख्या '२४' का उत्तर :-

उ० :- भारतीय लोकतंत्र में विकास की प्रगति में जाति, धर्म, लैंगिक मसले निम्न प्रकार से अवरोधक है।

(1) जाति :- लोकतंत्र में जातिवाद एक ऐसा विषय है जो लोकतांत्रिक बिम्बों के लिए घातक होता है, जाति के आधार पर लोकतंत्र में प्रतिनिधि का चुनाव भी जातिवाद के आधार पर होता है और लोगों में छुआछूत और ऊँच नीच की भावना जागृत होती है।

उदा० :- एक उच्च जाति का पुरुष है वह निम्न जाति के पुरुष के हाथ का पानी नही पीता है। और निम्न जाति के होने के कारण उसे मत नही देता है,

२) **धर्म** :- लोकतंत्र के प्रगति के मार्ग में धर्म सबसे बड़ा अवरुद्धक है इसके द्वारा साम्प्रदायिकता का भाव उत्पन्न होता है तथा धर्मान्धता का जन्म होता है। धार्मिक आधार पर लोकतंत्र में सामाजिक विभाजन हो जाता है।

और विपरित- विपरित धर्म के व्यक्तियों में ईर्ष्या, द्वेष व वैमनुष्यता के भाव जाग्रत होने लगता है और इसके द्वारा हिंसक घटनाएँ देखने को मिलती है।

उदा०:- इसका एक अच्छा उदा० भारत पाकिस्तान के विभाजन से है जो कि धार्मिक आधार है।

३) **लैंगिक असमानता** :- लोकतंत्र में लैंगिक असमानता निम्न प्रकार से अवरोधक है। भारत एक पुरुष प्रधान देश है और यहाँ स्त्रियों को पुरुषों की तुलना में कम महत्व दिया जाता है और जिससे लोकतंत्र में महिलाओं को 10% प्रतिनिधित्व करने का अवसर प्राप्त होता है।

और महिलाओं की साक्षरता दर पुरुषों की अपेक्षा बहुत कम है।

उदा०:- महिलाओं की लोकसभा में सदस्यों की संख्या केवल 10% है तथा राज्य सभा में 5% है।

और स्थानीय निकायों में में महिलाओं की संख्या 1 तिहाई है।

प्रश्न संख्या 25 का उत्तर:-

उ०:- राजनीतिक दल:- लीकॉक के अनुसार "राजनीतिक दल एक ऐसा संगठन है जो सत्ता को प्राप्त करने के लिए संगठन के रूप में कार्य करता है।"

लोकतंत्र में राजनीतिक दलों की अहम भूमिका का विचार निम्न तथ्यों के आधार पर किया जा सकता है।

(1) जनमत का निर्माण करना:- राजनीतिक दल लोकतांत्रिक

प्रणाली को पूर्ण करने के लिए तथा सत्ता को प्राप्त करने के लिए जनमत का निर्माण करती है अर्थात अपनी सरकार को भारी मतों से विजयी बनाने के लिए वोटों का प्रयोग करती है।

(२) लोगों को राजनीति की शिक्षा देना :-

राजनीतिक दल लोगों को लोकतंत्र के बारे में विविध जानकारी देते है तथा राजनीति के क्षेत्र में जाने के लिए प्रेरित करते है।

(3) उचित प्रतिनिधि का चुनाव :-

राजनीतिक दलों के द्वारा उचित प्रतिनिधि का चुनाव किया जाता है तथा उसे विजयी करने के लिए वोटो को माँगते है।

(४) समाचार पत्रों पर नियंत्रण :-

राजनीतिक दलों के द्वारा समाचार पत्रों पर नियंत्रण किया जाता है।

प्रश्न सं० - 26 का उत्तर

उ०:- प्राथमिक (कृषि) क्षेत्रक से प्रच्छन्न बेरोजगारी की समाप्ति के लिए निम्नलिखित उपाय हैं।

(1) अधिकतर कृषि ग्रामीण इलाकों में की जाती है क्योंकि वहाँ के युवकों के लिए आय के कोई अन्य साधन उपलब्ध नहीं कृषि के अलावा, इसलिए ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार की व्यवस्था की जानी चाहिए।

(2) कृषि की आधुनिकीकरण के लिए नूतन औजारों को उपलब्ध कराना चाहिए,

(3) तथा ग्रामीण क्षेत्रों में प्रच्छन्न बेरोजगारी को समाप्त करने के लिए नए कुटीर उद्योगों की स्थापना करनी चाहिए।

(4) बैंकों में किसानों व मजदूरों के लिए ऋण की व्यवस्था की जानी चाहिए।

प्रश्न सं० - २७ का उत्तर

उ०:- **वस्तु विनिमय:-** वस्तु विनिमय से आशय है कि एक वस्तु की आवश्यकता के लिए दूसरी वस्तु को कु आदान प्रदान वस्तु विनिमय कहलाता है।

वस्तु विनिमय की निम्नलिखित कठिनाईयाँ है।

(1) **वस्तु विभाजन में कठिनाई:-** वस्तु विनिमय में वस्तु विभाजन में कठिनाई होती है। माना श्याम को गेहूँ की आवश्यकता है और वह गाय को बेचता है एक कुंतल गेहूँ के लिए वह अपनी गाय का विभाजन तो नही कर सकता है।

(2) **मूल्य संचय में कठिनाई:-** वस्तु विनिमय में मूल्य संचय में कठिनाई होती है क्यों कि कुछ कुछ ऐसी वस्तुए होती है जिनका संचय नहीं किया जा सकता है।

(२) दोहरे संयोग का अभाव:-

वस्तु विनिमय में दोहरे संयोग का अभाव होता है। कोई जरूरी नहीं है कि किसी व्यक्ति को गेहूँ के बदले में गाय चाहिए तो उसे वह व्यक्ति मिल जाएगा।

(३) स्थानांतरण में कठिनाई :- वस्तु विनिमय में स्थानांतरण में कठिनाईयाँ होती हैं और यातायात की इतनी सुविधा भी नहीं होती है कि हम सारी वस्तुओं को अपने साथ ले जाए।

उदा यदि कोई व्यक्ति अपने पैतृक गाँव से कहीं और जाना चाहता है तो वह अपने घर में उपस्थित सभी वस्तुओं को अपने साथ नहीं लेजा सकता है।

अपितु अब मुद्रा के माध्यम से वस्तु को बेच सकता है।

28 का उ० :-

अर्थ :- बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ वे कम्पनियाँ होती हैं जो अन्य देशों में अपनी इकाई स्थापित करती है तथा उनके ऊपर अपना स्वामित्व स्थापित करती है बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ कहलाती है।

आधुनिक अर्थव्यवस्था में उनकी कार्य प्रणाली निम्न प्रकार की है :-

1) बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ अपने उत्पादन के लिए उन स्थानों का चयन करती है जहाँ बाजार क्षेत्र अधिक विस्तृत हो

2) बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ अपनी कार्यप्रणाली के अनुसार क्षेत्रीय उत्पादन इकाईयों को अपने साथ जोडकर के अपने बाजार क्षेत्र को बढाती हैं।

3) बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के द्वारा के द्वारा वैश्वीकरण में वृद्दि होती है। तथा आयात निर्यात बढता है।

बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के द्वारा सभी देशों को अपनी आर्थिक स्थिति मजबूत करने का अवसर प्राप्त होता है।

बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के द्वारा देश में उदारीकरण व्यवस्था लागू होती है।

का अंत

" भारत में 1991 में उदारीकरण व्यवस्था का अंत हुआ, "